B-3 & 4
L-16
Ethics

सत्यनिष्ठा

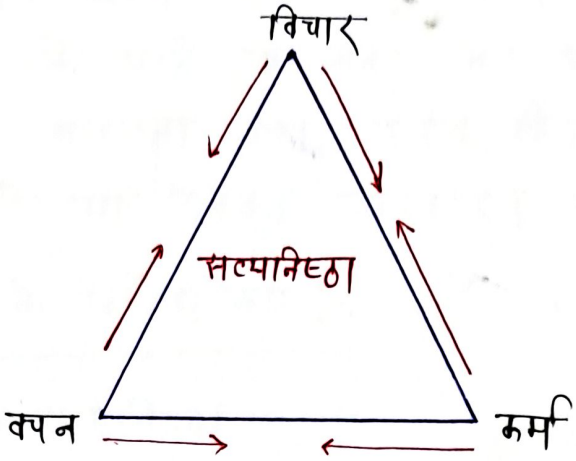

- विचार, वचन और कर्म में संगति सत्यनिष्ठा है। जैसा विचार है वैसा कर्म कर रहे हो।
- सत्यनिष्ठा सिविल सेवा का एक महत्वपूर्ण आधारभूत मूल्य है। बिना किसी भय दबाव या प्रलोभन के सार्वजनिक मूल्यों के प्रति नियमों और कानूनों आदि के प्रति निष्ठा रखते हुए सार्वजनिक हित में अपने अधिकारों और कर्तव्यों का दृढ़तापूर्वक पालन ही सत्यनिष्ठा है।

  सत्यनिष्ठा को नैतिक सिद्धांतो की दृढ़ता, निर्दोष चरित्र आदि के रूप में भी परिभाषित किया जाता है।

- नोलन समिति के अनुसार 'पद और स्थिति' के अनुसार अपने दायित्व को निभाने में विश्वास, ईमानदारी और प्रतिबद्धता होनी चाहिए; सार्वजनिक पद पर बैठे लोगो को कोई

ऐसा कार्य नही करना चाहिए जिससे वित्तीय या किसी अन्य रूप में अन्य संगठनों या व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता का भाव उत्पन्न हो और बाध्यता वश उनके हित में कार्य करना पड़े या उनका सरकारी कार्य प्रभावित हों

सत्यनिष्ठा के विविध रूप :-

1.) बौद्धिक सत्यनिष्ठा

2.) व्यापिक सत्यनिष्ठा

3.) नैतिक सत्यनिष्ठा आदि।

1- बौद्धिक सत्यनिष्ठा :- इसका आशय है कि व्यक्ति के कथनी और करनी में कोई अंतर नही होना चाहिए उसे स्वीकृत मूल्यों एवं मानकों के अनुसार कार्य करना चाहिए। उसे अपने लिए एक मानदण्ड और दूसरों के लिए अलग मानदण्ड का प्रयोग नही करना चाहिए। सही तथ्यों और तर्कों पर आधारित विचार का समर्थन करना चाहिए। उसे कुतर्क या दोहरा वर्ताव नही करना चाहिए।

2. व्यवसायिक सत्यनिष्ठा :- व्यवसाय या पेशे से संबंधित स्वीकृत मूल्यों, नियमों और दिशा निर्देशों के अनुसार काम करना ही व्यवसायिक सत्यनिष्ठा

है जैसे- रतन टाटा, नारायण मूर्ति, अमीत प्रेम जी इत्यादि।

व्यवसायिक सत्यनिष्ठा के उल्लंघन के उदाहरण :-

(i) गलत बैलेंस सीट दिखाकर लोगों को निवेश के लिए आकर्षित करना।
(सत्यम कम्प्यूटर, रामलिंगम राजू घोटाला)

(ii) गलत तरीके से क्लिनिकल ट्रायल ताकि नई दवाओं की खोज की जा सके।

(iii) खाद्य पदार्थों में मिलावट।

(iv) कॉपी राइट का उल्लंघन।

(iii) नैतिक सत्यनिष्ठा :-

नैतिक मूल्यों और सिद्धांतो के प्रति प्रतिबद्धता। इसमें लक्ष्य या उद्देश्य की प्राप्ति हेतु साधनों की पवित्रता पर बल दिया जाता है।

नैतिक सत्यनिष्ठा के पक्ष हैं- ईमानदारी, न्यायप्रियता, मानवीय गरिमा की भावना, न्यायप्रियता नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पण, दूसरों का सम्मान आदि।

निजी और सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता को बढ़ावा देने में नैतिक सत्यनिष्ठा शामिल है। इससे परस्पर विश्वास बढ़ता है और सहयोग एवं सामंजस्य की भावना प्रबल होती है।

सत्यनिष्ठा के व्यवहारिक आयाम :-

- वित्तीय मामलों में सुचिंतापूर्ण व्यवहार, रिश्वत एवं भाई-भतीजावाद से दूरी।
- किसी को अनुचित लाभ पहुँचाने हेतु नियमों में बदलाव या नियमों से बचना।
- केवल व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा की आवश्यकता नही है बल्कि अपने अधीनस्थों के सुचिंतापूर्ण व्यवहार भी सुनिश्चित करना आवश्यक है।
- इसके लिए इनके कार्यों की निगरानी एवं मूल्यांकन की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।
- अपने अधीनस्थों के साथ भेद-भावपूर्ण व्यवहार नही होना चाहिए।
- यदि कोई गलत कार्य करता है तो फिर उसे अनुचित संरक्षण नही देना चाहिए।
- सत्यनिष्ठा कर्मचारियों को प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत करना चाहिए।
- पद एवं अधिकार का दुरूपयोग को रोकने के लिए आचरण संहिता एवं नीति संहिता का होना आवश्यक है।

प्रशासन में राजनीतिक हस्तक्षेप कम करते हुए गैर तरफदारी को बढ़ावा देना।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

- गांधी के अनुसार व्यवसायिक सत्यनिष्ठा का उल्लंघन एक प्रकार का सामाजिक पाप है।

सत्यनिष्ठा के दार्शनिक आधार :-

1. गीता का स्वधर्म → वर्ण एवं आश्रम के अनुसार निर्धारित कर्म का सम्पादन।

2. बौद्ध → अष्टांगिक मार्ग - [संकल्प, वाक्, कर्मान्त] सम्यक ↓ उचित
(इसमें सत्यनिष्ठा की बात है।)

3. जैन → त्रिरत्न - {दर्शन, ज्ञान, चरित्र} सम्यक

4. कान्ट → "कर्तव्य कर्तव्य के लिए" पर बल

5. संविधान की प्रस्तावना में वर्णित मूल्य

6. गांधी → नैतिकता युक्त व्यापार

7. सुशासन एवं नैतिक शासन की स्थापना हेतु सत्यनिष्ठा का होना आवश्यक है।

प्रशासन में सत्यनिष्ठा का महत्व या प्रासंगिकता :-

1. सुशासन एवं नैतिक शासन और लोक कल्याणकारी शासन की स्थापना हेतु सत्यनिष्ठा का होना आवश्यक है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

2- सरकार की नीतियों एवं योजनाओं के त्वरित प्रभावी एवं कुशलतापूर्वक क्रियान्वयन हेतु प्रशासन में सत्यनिष्ठा का होना आवश्यक है।

3. यह प्रशासन और जनता के मध्य दूरी को कम करने में सहायक है। इस रूप में यह जनसहभागिता को बढ़ाकर जनकेन्द्रीत शासन की स्थापना में सहायक है।

4- यह प्रशासन में भ्रष्टाचार को रोकने में सहायक है।

5. यह प्रशासनिक अधिकारियों में गैर-तरफदारी और भेदभाव रहितता को बढ़ाने में सहायक है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सत्यनिष्ठा

रोक / नियंत्रण	बढ़ावा
- भ्रष्टाचार	- निष्पक्षता
- लोक निधि के दुरूपयोग	- सहिष्णुता
- लाल फीताशाही	- कमजोर वर्गों के प्रति करूणा समानुभूति
- पद का दुरूपयोग	- लोक निधि उपयोग
- भाई भतीजावाद	- पारदर्शिता
- रिश्वत खोरी	- त्वरित न्याय
	- कुशल शासन

वस्तुनिष्ठता (Objectivity)

अनात्मनिष्ठता	वस्तुनिष्ठता
- स्वयं के ऊपर निर्भरता	- जो हमारे ऊपर निर्भर नही बाह्य निर्भरता
- विविधता की स्थिति, एकरूपता की कमी।	- एकरूपता संभव
- भ्रष्ट आचरण की संभावना	- भ्रष्टाचार पर लगाम
- मनमाना पन हो सकता है।	- मनमानेपन पर रोक
- जवाबदेहिता के निर्धारण में कठिनाई	- बाह्य आधार जैसे- कानून नियम, साक्ष्य, प्रमाण आदि। के आधार पर निर्णय
- पारदर्शिता नही	- जवाबदेहिता का निर्धारण आसानी से
	- पारदर्शिता बढ़ेगी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR